कक्षा – नौवीं

पाठ – गिल्लू (संचयन)

प्रश्न-उत्तर

1. सोनजुही में लगी पीली कली को देख लेखिका के मन में कौन से विचार उमड़ने लगे?

उत्तर: सोनजुही में लगी पीली कली को देख लेखिका को गिल्लू की याद आ गई। लेखिका को विचार आया कि वह छोटा जीव लता की सघन हरीतिमा में छिपकर बैठ जाता था। लेखिका के निकट पहुँचते ही उनके कंधे पर कूदकर उन्हें चौंका देता था। तब लेखिका को कली की खोज रहती थी, परंतु आज उसे उस लघुप्राण की खोज है जिसे सोनजुही के पास ही मिट्टी में दबाया गया था।

2. पाठ के आधार पर कौए को एक साथ समादरित और अनादरित प्राणी क्यों कहा गया है?

उत्तर: कौआ बड़ा विचित्र प्राणी है। इसका कभी आदर किया जाता है तो कभी अनादर। हिंदू धर्म में ऐसी मान्यता है कि पितरपक्ष के समय हमारे पूर्वज हमसे कुछ पाने की आशा में कौवे के भेष में आते हैं और हम उन्हें सम्मानसहित भोजन करवाते हैं। एक अन्य मान्यता है कि जब कौवा काँव–काँव करता है तो इसका मतलब होता है कि घर में कोई मेहमान आने वाला है। इन कारणों से कौवे को सम्मान दिया जाता है। लेकिन दूसरी ओर कौवे के काँव– काँव करने को अशुभ भी माना जाता है। इसलिए कौवे को एक साथ समादरित और अनादरित प्राणी कहा गया है।

3. गिलहरी के घायल बच्चे का उपचार किस प्रकार किया गया?

उत्तर: लेखिका गिलहरी के घायल बच्चे का उपचार बहुत ध्यान से ममतापूर्वक किया। लेखिका उसे उठाकर अपने कमरे में ले गईं। रुई से उसका खून पोंछकर उसके घावों पर पेंसिलिन का मरहम लगाया। उसके बाद रुई की बत्ती से उसे दूध पिलाने की कोशिश की गई परन्तु दूध की बूँदें मुँह के बाहर ही लुढ़क गईं। लगभग ढ़ाई घंटे के उपचार के बाद गिलहरी के बच्चे के मुँह में पानी की कुछ बूँदें जा सकीं। तीन दिन में वह स्वस्थ हो गया। इसप्रकार उसका बहुत ही कोमलतापूर्वक उपचार किया गया।

4. लेखिका का ध्यान आकर्षित करने के लिए गिल्लू क्या करता था?

उत्तर: लेखिका का ध्यान आकर्षित करने के लिए गिल्लू उनके पैरों के पास आता और फिर सर्र से परदे पर चढ़ जाता था। उसके बाद वह परदे से उतरकर लेखिका के पास आ जाता था। यह सिलसिला तब तक चलता रहता था जब तक लेखिका गिल्लू को पकड़ने के लिए दौड़ने न लगती थीं।

5. गिल्लू को मुक्त करने की आवश्यकता क्यों समझी गई और उसके लिए लेखिका ने क्या उपाय किया?

उत्तर: जब गिल्लू के जीवन में पहला बसंत आया तब बाहर की गिलहरियाँ खिड़की की जाली के पास आकर चिक–चिक करके कुछ–कुछ कहने लगीं। उस समय गिल्लू जाली के पास आकर बैठ जाता था और उन्हें निहारता रहता था। तब लेखिका को लगा कि अब गिल्लू को गिलहरियों के बीच स्वच्छंद विहार के लिए मुक्त कर देना चाहिए। लेखिका ने उसे मुक्त करने के लिए जाली का कोना खोल दिया ताकि इस मार्ग से गिल्लू आ–जा सके।

6. गिल्लू किन अर्थों में परिचारिका की भूमिका निभा रहा था?

उत्तर: एक बार लेखिका मोटर–दुर्घटना में घायल होकर कुछ दिन तक अस्पताल में रहीं। अस्पताल से घर आने पर गिल्लू लेखिका के तकिए के सिरहाने बैठकर अपने नन्हे–नन्हे पंजों से उनके सिर और बालों को

इतने हौले-हौले सहलाता रहता कि उसका वहाँ से हटना लेखिका को किसी परिचारिका के हटने के समान लगता। इस प्रकार लेखिका की अस्वस्थता में गिल्लू ने परिचारिका की भूमिका निभाई।

7. गिल्लू की किन चेष्टाओं से यह आभास मिलने लगा था कि अब उसका अंत समय समीप है?

उत्तर: जब गिल्लू का अंत समय आया तो उसने खाना-पीना छोड़ दिया। वह घर से बाहर भी नहीं गया। गिल्लू अपने अंतिम समय में झूले से उतरकर लेखिका के बिस्तर पर निश्चेष्ट लेट गया। उसके पंजे पूरी तरह ठंडे पड़ चुके थे। वह रात भर लेखिका की वही ऊँगली पकड़ें रहा जो उसने बचपन में अपनी मरनासन्न स्थिति में पकड़ी थी और प्रभात होने तक वह सदा के लिए मृत्यु की नींद सो गया।

8. 'प्रभात की प्रथम किरण के स्पर्श के साथ ही वह किसी और जीवन में जागने के लिए सो गया' - का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: इस कथन का आशय है कि प्रातः कालीन सूर्य की किरणों के साथ ही गिल्लू ने अपना शरीर त्याग दिया। इस पंक्ति में लेखिका ने पुनर्जन्म की मान्यता को स्वीकार किया है। लेखिका को लगता है कि किसी अन्य जीवन में जन्म लेने के लिए उसने अपने प्राण त्याग दिए।

9. सोनजुही की लता के नीचे बनी गिल्लू की समाधि से लेखिका के मन में किस विश्वास का जन्म होता है?

उत्तर: सोनजुही की लता के नीचे गिल्लू की समाधि बनी थी। इससे लेखिका के मन में इस विश्वास का जन्म हुआ कि एक - न - एक दिन यह गिल्लू इसी सोनजुही की बेल पर पीले फूल के रूप में जन्म लेगा ।